फूलों की तुड़ाई

फूलों की तुड़ाई सुबह के समय सूर्य निकलने से पहले करनी चाहिए या शाम के समय की जानी चाहिए। धूप में तुड़ाई करने से फूल जल्दी मुरझा जाते हैं, उनकी खुशबू कम हो जाती है तथा तेल की मात्रा भी कम हो जाती है। फूलों को तोड़ने के बाद एक छायादार स्थान पर या कमरे में भण्डारण के लिए रखना चाहिए। फूलों को बेचने के लिए बांस की टोकरियों या कपड़े में बाँध कर भेजा जाता है।

उपज

पॉलीहाऊस में कट फ्लावर हेतु उगाई जाने वाली हाइब्रिड 'टी' वर्ग की प्रजातियों में एक वर्ष में लगभग 150–200 डंडियाँ प्रति वर्ग मीटर में उत्पादित होती है। गुलाब के पौधे में पॉलीहाऊस में पौध रोपण से 5 वर्ष तक पुष्पोत्पादन किया जा सकता है। इस से अधिक समय तक पौधों से पुष्पोत्पादन करने से उपज एवं फूलों की गुणवत्ता घट जाती है।

इसकी देसी किस्मों से लगभग 60–80 क्विंटल फूल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।

गुलाब के प्रमुख रोग:

(i) **चूर्णिल आसिता:** इस फफूंदजनिक रोग में पत्तियों, तनों तथा कलियों पर सफेद चूर्ण फैल जाता है।

उपचार: पौधों पर रोग की रोकथाम के लिए घुलनशील गंधक (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए ।

(ii) **डाईबैक:** इस रोग का प्रकोप वर्षा के बाद से प्रारम्भ होकर दिसंबर के अंत तक होता है। इस रोग में टहनियाँ ऊपर से नीचे की ओर सूखनी शुरू होती है एवं तना काला पड़ जाता है।

उपचार: संक्रमित टहनी को काट देना चाहिए एवं कटे हुए भाग पर बोरडेक्स पेस्ट लगाना चाहिए। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

गुलाब के प्रमुख कीट:

(i) **माहु (एफिड):** गुलाब में हरे एवं काले रंग के माहु होते है। यह कीट पौधों से रस चूसते रहते है। इसके प्रकोप से गुलाब की पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं एवं पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण: कीट का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

(ii) **स्केल:** यह भूरे रंग के कीट गुलाब के तने पर दिखाई देते हैं एवं रस चूसते हैं।

नियंत्रण: इस कीट के नियंत्रण हेतु टी स ओ का स्प्रे पौधे के तनो में करना चाहिए। कीट का प्रकोप होने पर फोसलोन (2 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर) का छिड़काव करना चाहिए। मिट्टी के तेल वाली रुई की सहायता से इन कीट को हटा देना चाहिए।

(iii) **रैड स्पाइडर माईट:** यह लाल रंग के एक दम छोटे कीट होते है। यह भी रस चूसने वाला कीट होता है एवं पौधे के नरम भाग पर ज्यादा पाया जाता है।

नियंत्रण: इस कीट के नियंत्रण के लिए एबामिक्टीन 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 0510-2730808
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2024/111

गुलाब की वैज्ञानिक खेती

प्रियंका शर्मा, गौरव शर्मा,
पूजा ए, प्रिंस कुमार एवं
अनीता पुयाम

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

गुलाब की वैज्ञानिक खेती

गुलाब एक सुन्दर फूल है और इसकी सुंदरता के कारण गुलाब को लगभग 2400 वर्ष पहले फूलों की रानी कहा गया है। यह रोजेसी कुल का सदस्य है। यह प्रेम प्रशंसा का प्रतीक है एवं सर्वाधिक लोकप्रिय फूल है। यह एक ऐसा फूल है जो हमारे जीवन में सभी रीति रिवाजों एवं धार्मिक कार्यक्रमों में उपयोग में लाया जाता है। भारत के मैदानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में गुलाब की खेती कट फ्लावर, लूस फ्लावर, सुगन्धित तेल इत्यादि उद्देश्यों के लिए की जाती है। इसके फूलों का उपयोग माला बनाने, गुलदस्ते बनाने एवं इसकी पंखुड़ियों से गुलाब जल, गुलकंद, सुगन्धित तेल, इत्र आदि बनाया जाता है। व्यावसायिक तौर पे महत्वपूर्ण फूलों में गुलाब विश्व भर में पहले स्थान पर है। सुगन्धित्त तेल उत्पादन के लिए गुलाब की रोसा डेमेसीना एवं रोसा बोरबोनियाना प्रजातियों को उपयोग किया जाता है। उत्तर प्रदेश का कन्नौज क्षेत्र गुलाब के सुगन्धित्त तेल उत्पादन के लिए मशहूर है।

प्रवर्धन

1. कलम या कटिंग द्वारा

यह सबसे सरल एवं कम लागत वाली विधि है। इसमें लगभग एक वर्ष पुरानी कलमों का इस्तेमाल किया जाता है। पेंसिल की मोटाई वाली कलमें जोकि लगभग 15–20 से.मी. हो, उसका चयन किया जाता है। आद्रता वाले कलमों में जड़ फुटाव के लिए, इसके निचले भाग को 2000 पी.पी.एम. आद्रता वाले आई.बी.ऐ. या रूटेक्स पाउडर से उपचारित किया जाता है। इन कलमों को तत्पशचात् बालू, कोकोपीट, वर्मीकूलाईट या परलाइट में लगाया जाता है। कलमों में फुटाव होने तक फुवार विधि से दिन में 2 बार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। लगभग 3 से 4 महीनों में इस विधि द्वारा पौधा तैयार हो जाता है।

2. चश्मा चढ़ाना या टी-बडिंग द्वारा

चश्मा चढ़ाना प्रवर्धन की सबसे लोकप्रिय विधि है। इस विधि द्वारा मूलवृन्त का चयन किया जाता है। मूलवृन्त के लिए रोजा मल्टिफ्लोरा या रोजा इन्डीका प्रजाति के पेंसिल की मोटाई जितने एक साल पुराने पौधों का चयन किया जाता है। चश्मा किसी भी व्यवसायिक किस्म का लिया जा सकता है। गुलाब में टी–बडिंग द्वारा चश्मा चढ़ाया जाता है। मैदानी क्षेत्रों में चश्मा चढ़ाने का उचित समय दिसम्बर से फरवरी माह है। इस विधि से लगभग 4 महीने में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते है।

प्रमुख किस्में:

(i) हाइब्रिड 'टी'

डॉ होमी भाभा, रक्तगंधा, डॉ बी पी पाल, ताज महल, फर्स्ट रेड, ग्रैंड गाला, सुपर स्टार, पूसा मोहित, पूसा महक, अर्का परिमला, अर्का किन्नरी, अर्का शर्मीली

(ii) फ्लोरीबण्डा

बंजारन, देहली प्रिंसेस, चन्द्रमा, सदाबहार, पूसा अल्पना, नीलांबरी, अर्का सींचना, अर्का सवी

(iii) *रोसा डेमैसीना*

नूरजहां, ज्वाला, रानी साहिबा

जलवायु

इसके सफल उत्पादन हेतु दिन का तापमान 25 से 30° सैल्सियस, जबकि रात का तापमान 16 से 18° सैल्सियस अति उत्तम पाया गया है। इसकी अच्छी बढ़वार हेतु पूर्ण रूप से सूर्य के प्रकाशयुक्त खुला स्थान होना चाहिए।

भूमि का चयन

उत्तम जल निकास वाली भूमि इसके लिए सर्वोत्तम रहती है। अतः इसके लिए बलुई दोमट मिटटी जिसका पी एच मान 6.5–7 हो उत्तम है।

पौधे लगाने का समय एवं सावधानियाँ

गुलाब की कलम एवं पौधे लगाने का उच्च समय अक्टूबर माह है परन्तु अक्टूबर से फरवरी तक भी लगाया जा सकता है। लगाते समय निम्न बातों का ध्यान रखें

1. पौधे लगाते समय कली एवं मूलवृन्त का जोड़ मिटटी की सतह से लगभग 10 सेमी. ऊपर रखें।
2. पौधे की रोग ग्रस्त या कीट ग्रस्त शाखा काटकर निकल दें।
3. जोड़ के नीचे मूलवृन्त से निकली हुई शाखाओं या सकर को निकालते रहें।

पौधों की दूरी

गुलाब की कतार तथा पौधे से पौधे की दूरी 45–60 से.मी. रखें। प्रत्येक कतार के बाद 60 से.मी. चौड़ी पट्टी रास्ते में छोड़ दी जाती है जिससे अन्तः सस्य कार्य में सहायता मिलती है।

खाद एवं उर्वरक

लगभग 50 टन गोबर की सड़ी हुई खाद लगाने से पहले मिटटी में मिला लेनी चाहिए। लगभग 200 किग्रा. नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश प्रति हेक्टेयर उपयुक्त है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश कि पूरी मात्रा मिटटी में लगाने से पहले मिलानी चाहिए। नाइट्रोजन की बची हुइ आधी मात्रा लगाने के लगभग 6 महीने बाद निंदाई करते समय मिलानी चाहिए।

सिंचाई

पौधों की बढ़वार एवं फूल उत्पादन हेतु उचित मात्रा में नमी की आवश्यकता होती है। अधिक सिंचाई गुलाब के पौधों के लिए हानिकारक है। सिंचाई 7–10 दिन के अंतर पर करनी चाहिए, जो मौसम व भूमि पर निर्भर करती है। उर्वरक देने के तुरंत बाद सिंचाई करना आवश्यक है।

कटाई-छंटाई (प्रूनिंग)

इस प्रक्रिया में पौधों की पुरानी टहनियों को काट दिया जाता है जिससे उसमें नई शाखायें आकर उनमें फूल आएं क्यूंकि इसमें फूल नई टहनियों पर ही आते हैं। जलवायु के अनुसार यह कार्य सामान्यतः अक्टूबर के प्रथम या दूसरे सप्ताह में किया जाता है। कटाई–छंटाई से लगभग 7 दिन पूर्व सिंचाई रोक देनी चाहिए। गुलाब की टहनी काटते समय यह ध्यान रखें कि पौधे पर 4–5 गाँठों तक की टहनी आवश्यक छोड़ दी जाये ताकि उनसे नई टहनियाँ विकसित हो सकें एवं अधिक फूल मिलें।

निंदाई, गुड़ाई एवं अन्तः सस्य क्रियाएं

समय–समय पर निंदाई–गुड़ाई करने से भूमि के खरपतवार नष्ट हो जाते हैं एवं जमीन भुरभुरी हो जाती है जिससे पौधों की जड़ों को उचित हवा मिलती है व पौधे स्वस्थ रहते हैं। मूलवृन्त से निकले हुए फुटाव/सकर समय–समय पर निकालते रहें, अन्यथा उनकी बढ़वार तेजी से होती है जिससे लगाई गई किस्मों की बढ़वार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

फूलों की कटाई एवं तुड़ाई

पुष्प डण्डियों की कटाई

गुलाब की पुष्प डंडी को कली अवस्था जब पुष्प की बाहरी दो पंखुड़ियां खुलनी शुरू हो जाये उस समय काटना चाहिए। डण्डियों को काटने के पश्चात् कटे हुए निचले भाग को साफ पानी में 5 से 6 से.मी. डुबोकर रखना चाहिए ताकि फूल ताजा बने रहें। फूलों को तत्पश्चात् 10 डण्डियों के बंडल में बाँधना चाहिए। इसके बाद इन् बंडलों को गत्ते के बाक्स में पैक करके बाजार भेज दिया जाता है। यदि बाजार में गुलाब के फूलों की कीमत अच्छी नहीं मिल रही हो तो शीतगृह में 2 सेंटीग्रेड तापमान पर लगभग 1 सप्ताह तक फूलों का भण्डारण किया जा सकता है।